ओ३म्

# आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र | नवम्बर 2018 (प्रथम)

## अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 विशेषांक

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली का शुभारम्भ करते हुए महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी को सम्मानित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत, श्री सत्यपाल जी, श्री धर्मपाल जी एम.डी.एच. व अन्य।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए महामहिम राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री सत्यपाल जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए योगगुरु स्वामी रामदेव जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए माननीय मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ जी।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
**मुख-पत्रिका**

वर्ष 14 अंक 19

सम्पादक :
उमेद शर्मा

## पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

## पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ( रजि० )
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

## सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

## सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म् ॥

**आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका**

# आर्य प्रतिनिधि

नवम्बर, 2018 ( प्रथम )
1 से 15 नवम्बर, 2018 तक

## इस अंक में....

1. सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ– अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2
2. महर्षि दयानन्द जी ने सत्य ज्ञान का किया प्रकाश 7
3. स्वामी दयानन्द जी को अपना गुरु और आर्यसमाज को धर्म माता कहने वाले की कहानी 9
4. यज्ञशाला 12
5. दीपावली पर जब दीप जले 14
6. महर्षि निर्वाण दिवस 15
7. समाचार-प्रभाग 16

## आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

# सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

❑ रामपाल आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

यह विचार कोरी कल्पना से या भावनात्मक दृष्टि से नहीं है यथार्थता है, जन-जन की भावना है। असंभव कुछ नहीं, आवश्यकता है सही कार्य के निर्णय की, कार्य की, सही योजना की और उसके साथ पूर्ण पुरुषार्थ की। यह सब कहने और सुनने में तो कई बार आता रहा है किन्तु उसका प्रत्यक्ष परिणाम या उसका फल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को देखने पर हुआ।

उपस्थित आर्यजनों ने अपनी कल्पना से ऊपर अकल्पनीय दृश्य देखकर आश्चर्य तो किया ही पर मुख से अकस्मात् निकला-वाह-वाह, गजब है, कितना भव्य है, ऐसा तो कोई सोच भी नहीं सकता था। आदि कथन प्रत्येक आगन्तुक के भावों में या वाणी में और इससे भी अधिक उनकी विस्मयकारी आंखों की ओर चेहरे की चमक से, प्रसन्नता से प्रदर्शित हो रहे थे।

प्रत्यक्ष रूप से मिलने वाला कोई व्यक्ति मिलता तो सबसे पहला शब्द यही होता था-बधाई हो, बहुत धन्यवाद, इतना बड़ा और भव्य कार्यक्रम तो कभी सोचा ही नहीं, आनन्द आ गया। इस प्रकार की अभिव्यक्ति सभा के पदाधिकारियों या कार्यकर्ताओं को सुनने को मिल रही थीं। आर्यजन आपस में ऐसे मिल रहे थे जैसे किसी पर्व पर प्रसन्न होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति इस आयोजन को सराह रहा था। कई कहते **''भूतो न भविष्यति''** हम कहते भाई भूत का तो माना जा सकता है किन्तु भविष्य न कहो, 2024 में महर्षि का 200वां जन्म वर्ष है, उसे इससे भी बृहद् मनायेंगे। यह सब शब्दों, विचारों से पूर्ण भाव-भंगिमा का होना स्वाभाविक ही था, इसमें कोई मिथ्या भाव या अतिशयोक्ति नहीं है।

कार्यक्रम को भव्य विशाल और सार्थकता प्रदान करने में तीन पहलुओं को देखना होगा। **पहला है कार्यक्रम का विचार, उसकी योजना और पूरी रूपरेखा निर्मित करना।** जिस प्रकार किसी इमारत के लिए एक व्यवस्थित, पूर्व से सोची-विचारी योजना को कागज पर चित्रित किया जाता है जिसे नक्शा कहते हैं, यह नक्शा एक प्रशिक्षित इंजीनियर के मार्गदर्शन में तैयार होता है, उसके अनुसार भवन का निर्माण होता है, जैसा नक्शा वैसा भवन। ठीक उसी प्रकार इस कार्यक्रम की पूर्व प्लानिंग कई माह से होती रही जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रमुख अधिकारी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी अधिकारी, अन्य कई आर्यसमाज के वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ताओं के द्वारा एक लम्बे समय के विचार विमर्श के पश्चात् अनेक प्रबुद्ध विचारशील आर्यजनों ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य के नेतृत्व में इसे अन्तिम रूप दिया। दिल्ली सभा के प्रधान भाई धर्मपाल आर्य को सम्मेलन का संयोजक मनोनीत किया था, उनके साथ ही श्री विनय आर्य की सक्रियता इसकी एक विशेष कड़ी रही। जब योजना अच्छी थी तो उसका व्यावहारिक रूप तो अच्छा अवश्यमेव होना था।

> ■ **उत्साह, उमंग, नवचेतना का सन्देश देता हुआ।**
> ■ **आर्यों का महाकुंभ-अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 सफलतापूर्वक सम्पन्न।**
> ■ **आर्यसमाज के इतिहास में एक और गौरवमय अध्याय बन गया।**

**कार्यक्रम सफलता का दूसरा पहलू था**-उस योजना का क्रियान्वयन करने वाले आर्यजन। यद्यपि संसार में पैसा ही सब कुछ नहीं है, किन्तु बहुत कुछ है, इससे कोई मना नहीं कर सकता। योजना का आधार धन होता है। यदि धन की व्यवस्था प्रचुर मात्रा में नहीं होती तो कितनी भी सुन्दर योजना होती वह योजना, योजना ही रह जाती। परमात्मा की कृपा से महर्षि व वैदिक धर्म अनुयायी भामाशाह बनकर आगे आये और कार्यकर्ताओं को आश्वस्त कर दिया, इस महान् कार्य की तैयारी के लिए।

इसमें सर्वप्रथम सदैव तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करने वाले आर्यजगत् के भामाशाह कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) सबसे आगे आये जिनका सम्मेलन के प्रचार-प्रसार में भी बहुत बड़ा सहयोग रहा। महाशय जी का उत्साह व सहयोग कितना था वह उनकी इस भावना से आप जान सकते हैं-**''सम्मेलन में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की ऐसी आवभगत करना जैसे जंवाई राजा की होती है। खाने-पीने में बढ़िया भोजन और शुद्ध घी का उपयोग हो।''** इस सम्मेलन की सफलता में महाशय जी का योगदान कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। इसके अतिरिक्त विशेष आर्थिक सहयोग देने वालों में श्री सुरेन्द्र जी आर्य जी (जे.बी.एम.), श्री सुमनकान्त जी मुंजाल (हीरो मोटो कोर्प)

श्री अशोक जी चौहान (एमिटी ग्रुप), श्री शिवकुमार जी चौधरी (प्रतिभा सिन्टैक्स ग्रुप) आदि का नाम उल्लेखनीय है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य का तथा सम्मेलन के संयोजक श्री धर्मपाल आर्य का आर्थिक योगदान भरपूर रहा है। इसके पश्चात् प्रान्तीय सभाओं में सबसे बड़ा सहयोग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्राप्त हुआ। दिल्ली सभा ने अथक परिश्रम करके दिल्ली की आर्यसमाजों से एक विपुल धनराशि सम्मेलन के लिए एकत्रित करने में सराजनीय सफलता प्राप्त की है। प्रान्तीय सभाओं में हरयाणा, पंजाब व कोलकाता आदि के नाम आर्थिक योगदान में विशेष उल्लेखनीय हैं। शेष प्रान्तीय सभाओं ने भी यशाशक्ति आर्थिक योगदान किया है। जिन महानुभावों ने सम्मेलन के पूर्व सहयोग नहीं दिया था, उन्होंने सम्मेलन स्थल पर आकर अपना आर्थिक सहयोग दिया, जिनकी संख्या हजारों में रही। इस यज्ञ में छोटी से छोटी राशि देने वाले भी बड़े उत्साह से राशि देकर अपने को भाग्यशाली मान रहे थे। इस प्रकार आर्थिक सहयोग देने हेतु पूरा आर्यजगत् तैयार दिखा।

सम्मेलन में विशाल उपस्थिति का भी एक अद्भुत दृश्य था, जब हजारों-हजारों की संख्या में आर्यजन जगह-जगह दिखाई पड़ रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी नगर या ग्राम में कोई जात्रा-मेला लगा हुआ है, जिसमें बच्चे, जवान, बूढ़े सभी देखने के लिए आए हुए हैं। पूरे कार्यक्रम की सार्थकता और शोभा, बड़ी संख्या में उपस्थित श्रोताओं के कारण ही हुई। इस सम्मेलन की अपार सफलता का मुख्य आधार प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से हजारों कार्यकर्त्ताओं का अथक पुरुषार्थ, दानदाताओं, विद्वानों का सहयोग और परमपिता परमात्मा की अपार कृपा रही। इसीलिए यह इतना भव्य व सफल हुआ।

सम्मेलन की सफलता का तीसरा पहलू है कार्यकर्ताओं द्वारा इस योजना को सफल बनाने के लिए प्रयास। कार्यक्रम में जो कार्यकर्ताओं के मनोबल और उत्साह की पराकाष्ठा देखने में आई उसे जुनून शब्द से समझा जा सकता है। तात्पर्य यह कि मनुष्य की उसी स्थिति को जुनून कहा जाता है जिसमें वह कुछ पाने के लिए अथवा कुछ कर गुजरने के लिए अपनी पूरी शक्ति और सब कुछ दांव पर लगाकर भी उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है। वही जुनून अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए जी जान से जुटे कार्यकर्ताओं में देखने को मिला।

सक्रियता, उत्साह और लक्ष्य जब तीनों का मिश्रण हो जाए तो असफलता का कोई कारण ही नहीं बनता। जो आँखों ने देखा, कानों ने सुना उसकी कल्पना तो हमें पहले ही हो चुकी थी। गांव-गांव और शहर-शहर में प्रान्तीय सभाओं के माध्यम से सम्मेलन का प्रचार किया गया था। भारत के बाहर अनेक देशों में प्रत्यक्ष रूप से जाकर सम्मेलन में आने का निमंत्रण दिया था जिसके परिणाम स्वरूप इतनी विशाल जनसमूह की उपस्थिति एक स्थान पर हुई। निरन्तर कार्यकर्त्ताओं से और आर्यजनों से सम्पर्क बना रहा। बार-बार उन्हें आने के लिए आह्वान किया गया। इसके पश्चात् रात-दिन कार्यकर्ता इसमें जुटे रहे, जैसे-जैसे समय आ रहा था, वैसे-वैसे कार्यकर्ताओं की सक्रियता जिम्मेदारियां और मन में चिन्ता बढ़ती जा रही थी। चिन्ता इसलिए बढ़ रही थी कि जो अनुमान था उससे अधिक उपस्थिति का अनुमान हो गया था। यह भी हो गया था कि इतने सारे व्यक्तियों की व्यवस्था जो कठिन कार्य है वह कहीं बिगड़ न जाए किन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आर्यवीर दल दिल्ली और दिल्ली की सारी आर्यसमाजें उनके सारे सदस्य अतिथिदेवो भव: की परम्परा को निर्वाह करने में जुट गए और और उसमें वे सफल हो गए। श्री जगबीरसिंह और बृहस्पति जी आर्य के नेतृत्व में आर्य वीर दल हरयाणा व दिल्ली के आर्यवीरों का सहयोग भी अत्यन्त सराहनीय रहा। 60 बसें जो यात्रियों को लाने-ले जाने का कार्य रात-दिन कर रही थीं उससे आर्यवीर दल की बड़ी हिस्सेदारी रही।

चौथा बिन्दु था, कार्यक्रम को गरिमा प्रदान करने वाले कार्यक्रम और उनकी प्रस्तुति के लिए आमन्त्रित वक्तागण, विद्वान अतिथि एवं श्रोतागण।

इस कार्यक्रम में तीनों ही बातों का पूर्ण समावेश था। कार्यक्रम के सभी सत्र समाज, राष्ट्र, वैदिक धर्म कुरीतियों एवं पाखण्ड से संबंधित थे और प्रत्येक विषय पर जो वक्ता आमन्त्रित किए गए थे उनके बहुत ही विद्वत्तापूर्ण, सामयिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए उद्बोधन हुए। देश के ख्यातिनाम भजनोपदेशकों ने भी अपनी उपस्थिति से सम्मेलन की गरिमा को ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। उपस्थिति की दृष्टि से भारत वर्ष के कोने-कोने से भारी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। 28 देशों से 2000 से अधिक आर्यजनों की उपस्थिति रही जिसमें पाकिस्तान, बंगला देश, दक्षिण अफ्रीका, मॉरिशस, सूरीनाम, हॉलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर, थाईलैण्ड, कैनेडा, फिजी, नेपाल, बर्मा, इंग्लैण्ड, कीनिया, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों से

प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे। इतने सारे विदेशी प्रतिनिधियों का एक मंच पर उपस्थिति होना अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की गरिमा को सिद्ध कर रहा था। देश के राजनेताओं तक व सरकार तक आर्यसमाज की गतिविधियों तथा विचारधारा को पहुंचाने के उद्देश्य से भी यह सम्मेलन काफी सफल रहा।

भारत के माननीय राष्ट्रपति महोदय ने, आसाम, सिक्किम तथा हिमाचल के माननीय राज्यपालों ने, भारत सरकार के कई माननीय मंत्रियों ने उत्तरप्रदेश तथा हरयाणा के सम्माननीय मुख्यमंत्रियों ने, दिल्ली के माननीय उप-मुख्यमंत्री ने तथा दिल्ल विधानसभा के अध्यक्ष महोदय आदि ने इस सम्मेलन में पधार कर आर्यसमाज की गौरवगाथा को एक अत्यन्त भव्य स्वरूप प्रदान किया है। विश्वविख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी ने अपने ओजस्वी व प्रेरक प्रवचन से सम्मेलन में पधारे हुए सभी आर्यजनों को काफी उत्साहित किया। वे सम्मेलन के सम्पूर्ण आयोजनों से अत्यधिक प्रभावित थे। आचार्य बालकृष्ण तथा स्वामी रामदेव जी 10,000 बच्चों द्वारा किए गए बृहद् यज्ञ के को देखकर हतप्रभ रह गये थे।

इस सम्मेलन में अनेक संन्यासीगणों को आमन्त्रित किया गया था जिनमें स्वामी धर्मानन्दजी, स्वामी प्रणवानन्दजी, स्वामी देवव्रतजी, स्वामी विवेकानन्दजी, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, स्वामी व्रतानन्दजी, स्वामी ऋतस्पतिजी, स्वामी वेदानन्दजी सरस्वती, स्वामी सदानन्दजी, स्वामी गोविन्दागिरीजी, स्वामी सुधानन्दजी, स्वामी चिदानन्दजी, स्वामी विदेहयोगी जी, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, स्वामी धर्ममुनिजी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, साध्वी उत्तामायति जी, साध्वी पुष्पाजी आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

विद्वानों में डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. वेदपालजी, डॉ. महावीर जी अग्रवाल, डॉ. ज्वलन्त जी, डॉ. प्रशस्यमित्र जी, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी, आचार्य वागीश जी (एटा), आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. महेशजी विद्यालंकार, आचार्य अग्निव्रत जी, आचार्य सनतकुमार जी, डॉ. जयेन्द्रजी (नोएडा), डॉ. कर्णदेव जी, आचार्य पुनीत शास्त्री जी, डॉ. रामकृष्ण शास्त्री जी, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार जी, डॉ. दुलाल शास्त्री जी, डॉ. सूर्यादेवी जी, डॉ. नन्दिता जी, डॉ. अन्नपूर्णा जी, डॉ. प्रियवन्दा जी, आचार्या गायत्री जी (नोएडा), डॉ. पवित्रा विद्यालंकार जी, डॉ. उमा आर्या जी आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

भजनोपदेशकों में योगेशदत्त जी, पं. सत्यपालजी पथिक, नरेशदत्त जी, कुलदीप जी, अंजलि आर्या, कुलदीप विद्यार्थी, श्री दिनेश पथिक, घनश्याम प्रेमी जी, जगत वर्मा जी, आचार्य अशोक जी, आचार्य मोहित शास्त्री जी, भानुप्रताप शास्त्री जी, केशवदेव शर्मा जी, कल्याण देव जी आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

सम्मेलन का प्रारंभ महाशय धर्मपालजी (एम.डी.एच.) एवं सभाप्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य के करकमलों से ओ३म् ध्वजारोहण करके किया गया। टाण्डा की कन्याओं ने ध्वज गीत गाया। तत्पश्चात् कार्यक्रम का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति माननीय रामनाथ जी कोविन्द के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर हिमाचल के राज्यपाल माननीय आचार्य देवव्रतजी, सिक्किम के राज्यपाल माननीय गंगाप्रसाद जी, केन्द्रीयमन्त्री श्री हर्षवर्धन जी, केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री सत्यपालसिंह जी, सांसद श्री स्वामी सुमेधानन्द जी, मेयर श्री आदेश गुप्ता जी आदि की भी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति रही। सम्मेलन के दूसरे दिन का शुभारम्भ योगगुरु स्वामी रामदेव के आगमन से हुआ। उन्होंने सम्मेलन की समस्त गतिविधियों का निरीक्षण किया और आर्यजनों की विशाल उपस्थिति देखकर वे अत्यन्त प्रभावित हुए।

इस अवसर पर आसाम के माननीय राज्यपाल श्री जगदीशमुखी जी और केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी जी भी उपस्थित रहे। स्वामी जी ने विदेशी प्रतिनिधियों के साथ भी अलग से बैठकर चर्चा की। शाम को दस हजार बालकों द्वारा एक स्थान पर एक साथ किये जाने वाले बृहद् यज्ञ के अद्भुत-अलौकिक वातावरण को देखकर स्वामी जी आश्चर्य चकित रह गये। आचार्य बालकृष्ण जी तथा पूज्य स्वामी रामदेव जी ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति में बृहद् यज्ञ के ऐतिहासिक कार्य को सम्पनन कराया। विश्व में प्रथम बार ऐसे सामूहिक यज्ञ के आयोजन को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में सम्मिलित किया गया है। सम्मेलन के तीसरे दिन का शुभारम्भ उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ जी, हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहर खट्टर, वित्तमन्त्री श्री कैप्टन अभिमन्यु, की गरिमामयी उपस्थिति से हुआ। इस दिन दिल्ली सरकार के उपमुख्यमंत्री तथा दिल्ली के विधानसभा के अध्यक्ष महोदय का भी आगमन हुआ। इसी दिन शाम को स्वामी धर्मबन्धु जी तथा आचार्य गोविन्ददेव गिरि जी के भी प्रवचन हुए। सम्मेलन के अन्तिम दिन के समापन के मुख्य अतिथि थे भारत के केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह जी। विशाल संख्या में उपस्थित श्रोताओं को अत्यन्त अनुशासन में बैठा देखकर वे अत्यन्त प्रभावित हुए थे। समापन के अवसर

पर विश्व हिन्दू परिषद्, आर.एस.एस. तथा कांग्रेस के कई नेता व प्रवक्ता उपस्थित थे।

इस भव्य सम्मेलन का कार्यक्रम स्थल इतना विशाल था कि एक स्वस्थ आदमी को भी पूरी तरह से देखने में थकान हो जाती थी, इसलिए वृद्धजनों के लिए या जो पैदल नहीं चल सकते थे उनके लिए 10 ई-रिक्शाओं द्वारा नि:शुल्क भ्रमण की व्यवस्था की गई थी, इस माध्यम से अनगिनत व्यक्ति अपने वांछित स्थान पर आ-जा रहे थे। कार्यक्रम का पाण्डाल इतना भव्य और विशाल बना हुआ था, जो दिल्ली की राजधानी में संभवत: नगण्य से स्थानों पर ही देखा जा सकता है, जिसमें बैठने की 20 हजार से अधिक व्यक्तियों की क्षमता थी। उपस्थिति का पूर्व अनुमान होने के कारण मुख्य पाण्डाल के बाहर बड़े-बड़े स्क्रीन लगा रखे थे, जिनमें हजारों व्यक्ति पाण्डाल के बाहर भी देखते पाए गए। पाण्डाल पूरी तरह भरा रहा। इसके अतिरिक्त 16 कक्ष अलग से निर्मित किये गये थे जिनमें अलग-अलग विषयों पर विद्वान् लोग गोष्ठियां कर रहे थे। बहुत ही विस्तृत अभूतपूर्व प्रदर्शनी जिसमें हजारों चित्र लगे थे आर्काण का मुख्य केन्द्र थे।

दक्षिण अफ्रीका की मूल कन्याओं ने वेदमन्त्र का पाठ करके हवन किया और भजन गाये जिससे श्रोतागण भावविभोर हो उठे। दक्षिण अफ्रीका की एक महिला ने इस अवसर पर संन्यास की दीक्षा ली जिनका नाम साध्वी मैत्रेयी रखा गया। इस सम्मेलन में कुछ अन्य आर्यबन्धुओं ने भी वानप्रस्थ तथा संन्यास की दीक्षा लेकर अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। सम्मेलन में पधारे हुए सभी राजनेताओं ने, माननीय राष्ट्रपति महोदय ने तथा स्वामी रामदेव जी ने अपने ओजस्वी प्रवचनों से इस सच्चाई को हृदय से स्वीकार किया कि देश की आजादी के आन्दोलन में और भारत के नवजागरण में ऋषि दयानन्द जी और आर्यसमाज की प्रमुख भूमिका रही है। मानव मात्र के कल्याण के लिए और सभी प्रकार के सामाजिक बदलाव के लिये सभी ने खूब जोरशोर से आर्यसमाज की विचारधारा को आगे बढ़ाने का आह्वान किया।

**कार्यक्रम की विशेषता**-यह थी कि परमात्मा की कृपा से हजारों की दैनिक उपस्थिति में किसी भी प्रकार की कोई दुर्घटना घटित नहीं हुई, कोई अव्यवस्था नहीं हुई। प्रत्येक ने यही कहा कि 2012 से भी अच्छी सर्वसुविधायुक्त यह कार्यक्रम रहा।

**वैदिक साहित्य**-की लगभग 200 स्टॉल लगी थी। जितने साहित्य व अन्य सामग्री इस अवसर पर वितरित हुई, उतनी कहीं कभी नहीं हुई, यह अपने आपमें एक विशेषता रही।

**कार्यक्रम स्थल अभूतपूर्व था**-कार्यक्रम स्थल की सुन्दर, अकल्पनीय, साजसज्जा को देखकर सभी मन्त्रमुग्ध हो रहे थे। मुख्य द्वार इतना विशाल और आकर्षक था, जिसे रास्ते से गुजरने वाला हर कोई देखने के लिए रुक कर देखता। इसके अतिरिक्त कुछ और विशेष कार्यक्रमों की सूची भी है जो पहली बार हुए।

दिल्ली के सभी आर्य विद्यालयों के बच्चों की ओर से आर्यसमाज के सिद्धान्तों, इतिहास तथा अन्धविश्वास निवारण पर आधारित अनेक लघु नाटिकाएं प्रस्तुत की गई जिन्हें सभी ने खूब सराहा। मुख्य पाण्डाल के अतिरिक्त अलग-अलग छोटे-छोटे 16 पाण्डाल लगे थे, जिनमें निरन्तर गोष्ठियां चल रही थीं, जिनमें प्रश्न-उत्तर, शंका-समाधान, प्रदर्शनी, यज्ञ, विज्ञान आदि पर विद्वान प्रवचन कर रहे थे।

**आर्य वीर दल**-आर्यवीर दल का विराट् प्रदर्शन सम्माननीय स्वामी देवव्रत जी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। लगभग ढाई घण्टे तक विभिन्न प्रान्तों से आये हुए आर्यवीरों ने हैरतअंगेज करने वाले प्रदर्शन किये।

**लेजर शो**-महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज की प्रमुख घटनाओं पर लेजर शो का प्रसारण अद्भुत था। स्थान-स्थान पर महर्षि के चित्र व सन्देश, वेदवाक्य आदि लगाए गए थे।

**वर्ल्ड रिकॉर्ड बना**-विशाल स्थल पर 10,000 बालकों द्वारा एक साथ यज्ञ करने का पहला अवसर था। विहंगम दृश्य आत्मविभोर कर रहा था। संसार में यह पहला अवसर था जब इतनी बड़ी संख्या में इसे सम्पन्न करवाया गया। इसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है।

**गुरुकुल-गोशाला**-गुरुकुल व्यवस्था किस प्रकार होती है, किस प्रकार वहां की वेशभूषा दिनचर्या होती है, रहने की प्राचीन समय से क्या व्यवस्था थी, किस प्रकार आचार्य शिक्षा प्रदान करते थे, गोशाला किस प्रकार होती है आदि बातों को एक छोटे रूप में निर्मित करके बताया जा रहा था, जहां बड़ी संख्या में निरन्तर उपस्थिति बनी रही।

**मुख्य यज्ञशाला**-एक बहुत विशाल स्थल में बनी थी जिसकी भव्यता अपने आप में सबको आकर्षित कर रही थी। यज्ञ में ब्रह्मा के रूप में देश के ख्यातिनाम विद्वान् और विदुषी अलग-अलग समय में यज्ञवेदी को सुशोभित करते रहे। सस्वर मन्त्रपाठ शिवगंज, चोटीपुरा, देहरादून, वाराणसी, हाथरस आदि गुरुकुल की कन्याओं द्वारा किया गया।

**छोटी यज्ञशाला**-इसके अतिरिक्त पास में ही एक छोटी यज्ञशाला निर्मित की गई थी, जिसमें निरन्तर यज्ञ चल रहा था। एक समय में 8 सदस्य बैठकर यज्ञ कर सकते थे। यह व्यवस्था दिल्ली की आर्यसमाजों के पुरोहितगणों द्वारा संचालित थी। इसमें भी दिनभर यज्ञ के लिए यजमान आते रहे।

**भोजन व्यवस्था**-इतनी बड़ी कि 30 से 40 हजार भोजन करने वालों की उपस्थिति में किसी को भोजन हेतु इन्तजार न करना पड़े, लम्बी पंक्ति में खड़ा न होना पड़े, खाद्य पदार्थों की कमी न पड़े। एक साथ कई प्रकार के व्यंजन उपलब्ध हों, यह सुनने में अविश्वसनीय लग रहा होगा, किन्तु यह हुआ है। प्रत्येक आगन्तुक के लिए यह एक अचम्भा था। इस हेतु विशाल भोजनशाला, भोजन करने हेतु विशाल परिसर और निरन्तर चल रही व्यवस्था जिसमें सैकड़ों स्वयंसेवक व आर्यजन सहयोग कर रहे थे, उनके प्रयास से यह संभव हो सका। हर कोई भोजन में बने पृथक्-पृथक् पदार्थों की और स्वादिष्ट व्यंजन की प्रशंसा कर रहा था।

**इसके अतिरिक्त**-खाने-पीने की सशुल्क व्यवस्था भी की गई थी। 30 प्रतिशत कम मूल्य पर प्रतिष्ठित दुकानदारों द्वारा शुद्ध सात्विक भोजन व खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराये जा रहे थे। कुछ दुकानों पर तरह-तरह की मिठाई, नमकीन, चाट आदि भी सशुल्क उपलब्ध थी। इसका उपयोग भी खूब हुआ।

**कार्यक्रम की विशेषता**-कार्यक्रम का लाईव प्रसारण टी.वी. चैनल पर हो रहा था, यूट्यूब, फेसबुक जैसे माध्यमों से भी कार्यक्रम की जानकारी प्रसारित हो रही थी जिसे कार्यक्रम स्थल के अतिरिक्त लाखों व्यक्ति अनेक देशों में देख रहे थे। वक्ताओं द्वारा वैदिक धर्म की विशेषता, आर्यसमाज का योगदान और आवश्यकता पर विचार प्रकट हो रहे थे। वैदिक धर्म व आर्यसमाज से संबंधित विचार प्रकट किये जा रहे थे। वैदिक धर्म व आर्यसमाज से संबंधित ऐसे प्रेरणास्पद विचार भारत के माननीय राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द जी के द्वारा, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी द्वारा, सिक्किम के राज्यपाल माननीय श्री गंगाप्रसाद जी द्वारा, आसाम के राज्यपाल माननीय श्री जगदीश मुखी जी द्वारा, केन्द्रीय मन्त्री श्री हर्षवर्धन जी, केन्द्रीय मन्त्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी, केन्द्रीय परिवहन मन्त्री श्री गडकरी जी, हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहरलालजी खट्टर एवं यू.पी. के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ जी, दिल्ली प्रदेश के उपमन्त्री श्री मनीष सिसोदिया तथा भारत के गृहमन्त्री श्री राजनाथसिंह जी, स्वामी गोविन्द गिरी जी (भारत माता मन्दिर हरिद्वार) द्वारा व्यक्त किये गए। सभी माननीय वक्ताओं ने, आर्यसमाज की श्रेष्ठता और आवश्यकता पर बड़ी मजबूती से व्याख्यान दिए। इससे पूरे मानव समाज पर आर्यसमाज का एक अच्छा प्रभाव पड़ा तथा आर्यसमाज की कार्यशैली को प्रोत्साहन मिला।

इस सम्मेलन में समलैंगिकता एवं यौन संबंधों की स्वतन्त्रता जैसे विषय पर चर्चा कर उससे समाज को बचाने के लिए भारत सरकार को ज्ञापन दिया गया। जातिवाद, आरक्षण, नशामुक्ति जैसे विषयों पर गंभीर चर्चा कर इन बुराइयों से समाज को बचाने का संकल्प लिया गया।

वेद सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य परिवार सम्मेलन, अन्धविश्वास निवारण सम्मेलन, आर्य वीर सम्मेलन, संस्कृति एवं सामाजिक चेतना सम्मेलन, कवि सम्मेलन व अनेक विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया। इससे पूर्व भी आर्यसमाज के बड़े-बड़े भव्य आयोजन होते आये हैं, उनसे तुलना करना अज्ञानता होगी वे जिस परिस्थिति में हुए उसके अनुसार उनका महत्त्व था। आज परिस्थितियां, साधन, तकनीकी व्यवस्था सब बदले हुए हैं। इसलिए कार्यक्रम का स्वरूप, व्यवस्था और विशाल भव्यता अभूतपूर्व थी। प्रत्येक कार्यक्रम व्यवस्थित हो, सार्थक हो, इसका पूर्ण प्रयास किया गया। कार्यक्रमों को ठीक से संचालित करना एक महत्त्वपूर्ण कड़ी होती है, इसलिए कार्यक्रम के व्यवस्थित संचालन हेतु कुशल व श्रेष्ठ अनुभवी वक्ताओं को जिम्मेदारी सौंपी गई थी, जिसमें श्री विनय आर्य, श्री विनय विद्यलंकार, श्री राजेन्द्र विद्यालंकार, श्री अशोक जी आर्य (उदयपुर), श्री वाचोनिधि आर्य, श्रीमती मृदुला चौहान, श्रीमती सुदेश आर्या जी, श्री सूर्यप्रसाद बीरे (हालैण्ड), श्री सुरेन्द्र रैली जी आदि प्रमुख थे। श्री सत्यवीर जी शास्त्री (अमरावती), श्री व्यासनन्दन जी शास्त्री (बिहार), श्री सतीश चड्ढा जी, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (दिल्ली) तथा डॉ. दक्षदेव जी (इन्दौर) आदि भी संचालन व्यवस्था में शामिल थे।

इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली की आर्यसमाजों, अन्य अनेक संस्थानों, आर्यवीर दल और सभी प्रान्तीय सभाओं के कर्मठ, समर्पित कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, विद्वानों को तो है ही किन्तु उन सभी आर्यबन्धुओं, माता तथा बहिनों को भी है, जो दूर-दूर से चलकर कष्ट उठाकर यहां पहुंचे और अपनी उपस्थिति से इस सम्मेलन की गरिमा बढ़ाई और इसे एक ऐतिहासिक सफलता प्रदान की।

# महर्षि दयानन्द जी ने सत्य ज्ञान का किया प्रकाश

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

महाभारत काल के पांच हजार वर्षो बाद समस्त बुराइयों को दूर करने वाले एकमात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती जी पहले ऋषि हुए। सन् 1883 के दीपावली के दिन अनन्त यात्रा में जाते हुए करोड़ों मानवों में आत्मिक ऊर्जा के करोड़ों दीप जला गये। धन्य हो ऋषि दयानन्द जी। युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्य ईश्वरीय ज्ञान व वेदों के सत्य अर्थों के मार्ग से हजारो वर्षो से सुसुप्त करोड़ों मानवों की आत्माओं में आत्मज्ञान के दीप जलाने वाले पहले ऋषि थे।

जब-जब सृष्टि मे ईश्वरीय वाणी वेदज्ञान का सत्य अर्थो के अभाव से मानव जगत् मे अनेक बुराइयां उत्पन्न होती हैं, तब-तब मोक्ष से लौटकर महापुरुषों का जन्म होता है। ऐसे महापुरुष विश्वात्मा के वाहन होते हैं, किन्तु वह परमात्मा के अवतार नहीं होते, अपितु उनमें समाज की बुराइयों को मिटा देने के लिए आत्मशक्ति का संचार होता है। अठारवीं व उन्नीसवीं सदी में भारत की जनता की आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक बुराइयों को दूर करने के लिए विषम परिस्थितियों में प्रत्येक चुनौतियों को स्वीकार करके रणक्षेत्र में महर्षि दयानन्द उतर पड़े थे।

महर्षि दयानन्द समय के दास बनकर नहीं आये थे किन्तु समय को अपना दास बनाने के लिए आये थे। जमाने की गर्दन पकड़कर सत्य मार्ग पर चलाने आये थे। महर्षि दयानन्द जी जब रणक्षेत्र में उतरे तो उन्हें चारों तरफ ललकार ही ललकार सुनाई दी, चारों ओर चुनौतियां ही चुनौतियां नजर आ रही थीं। पांच चुनौतियां उनके सामने मुख्य थीं जो निम्न प्रकार से है

आश्चर्य होता है युग में एक ऐसा ऋषि दुनिया को मिला, जिसने संसार की तमाम बुराइयों को दूर करने का बीड़ा उठाया था। इतिहास में एक ऐसा महापुरुष को हम देव कहें या ऋत देव कहें। मेरे ऋषि ने ईश्वरीय व्यवस्था व ईश्वरीय शिक्षा वेदों की ओर संसार को लौटाया और संसार के हित के लिये अपने प्राणों की भी आहुति दे दी। संसार के मनीषियों को निष्पक्ष चिन्तन करना चाहिए।

प्रथम चुनौती भारत को विदेशियों से मुक्त कराने की थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पहली चुनौती पर विचार किया कि दयानन्द तुम अपनी मातृभूमि को विदेशियों का गुलाम रहने दोगे। अन्दर से आवाज आई मैं विदेशी राज्य को बर्दाश्त नही करूंगा। उन्होंने राजस्थान के राजाओं को अंग्रजी शासन के प्रति विद्रोह करने के लिये तैयार करना शुरू कर दिया। दयानन्द जी के जीवन का बड़ा भाग भारतमाता को स्वतन्त्र कराने की योजना मे बीता। उन्होंने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा स्वराज्य सर्वोपरि होता है और महर्षि दयानन्द जी द्वारा निर्मित आर्यसमाज के लिये व सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। राष्ट्र को विदेशियों से मुक्त कराने की जिस चिंगारी का बीजारोपण महर्षि दयानन्द जी ने किया था उसकी प्रेरणा से लाखों-लाखों बीरों ने भारत माता के लिये अपना बलिदान देकर भारतमाता को बेड़ियों से मुक्त कराया था।

द्वितीय चुनौती वेदों के रूढ़ि अर्थों को शुद्ध करने की थी। भारत का धर्म वेदों से बंधा हुआ था, क्योंकि महर्षि दयानन्द जी से पूर्व विद्वानों ने वेदों के मन्त्रों के अर्थ इतिहास परक किये थे। शंकराचार्य, सायणाचार्य, महीधर, जेकोवी, मेक्समूलर आदि विद्वानों ने वेदों के अर्थ किये कि वेद स्त्रियों को नहीं पढ़ाना चाहिए, शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। वर्णव्यवस्था जन्म से होनी चाहिए। दलित वर्ग को समाज में दास के रूप मे रहना चाहिए। कलिप्त देवताओं की पूजा करनी चाहिए और देवी-देवताओं के नाम पर पशुबलि देनी चाहिए। भूत-प्रेत, जादू-टोना वेदों में लिखा है। उन्होंने वेदों के रूढ़ि अर्थ करके सम्पूर्ण समाजवादी व्यवस्था को अन्धविश्वास के कुएं मे ढकेल रखा था। महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के रूढ़ि अर्थों पर प्रहार किया और निरुक्तशास्त्र के अनुसार उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों में जो कुछ लिखा है, उसी को ईश्वर विधान मानते थे, क्योंकि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वे

संस्कृत के अगाथ पंडित थे। उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों में स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार है, वेदों में मूर्तिपूजा नहीं है, वेदों में पशुबलि नहीं है, वेदों में तन्त्र-मंत्र प्रेत पूजा नहीं हैं, वेदों में जाति-व्यवस्था नहीं है वर्ण व्यवस्था है। वेदों में कोई भी धार्मिक सामाजिक अन्धविश्वास नहीं है। उन्होने सिद्ध किया कि ईश्वर ने सृष्टि के आदि में ऋषियो की आत्मा में वेदों का ज्ञान, सृष्टिक्रमानुसार, विज्ञान के अनुसार दिया है। इसलिए वेदों के मन्त्रों के अर्थ भी ईश्वरीय विधान के अनुसार हैं। वेद पहले बने और इतिहास बाद में इसलिए वेदों के अर्थ रूढ़ि नहीं हैं।

तृतीय चुनौती धार्मिक अन्ध विश्वासों द्वारा हानि की थी। तथाकथित हिन्दूधर्म की आधारशिला वेद थे। महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के रूढिवादी अर्थों पर प्रहार कर सारे दृष्टिकोण को बदल दिया। ऋषि अपने ग्रन्थों में लिखते हैं कि धर्म परमात्मा द्वारा बनाया है और मत मनुष्यों द्वारा बनाए जाते हैं। वास्तव में जिन्हें समाज धर्म का नाम देता है वह मत है और प्रत्येक मतों में भिन्नता है, किन्तु ईश्वरीय धर्म एक ही रहता है। ईश्वरीय धर्म जैसे सूर्य, चन्द्रमा, ऋतुएं, पृथ्वी तत्त्व, रांत-दिन, जन्म-मरण, वनस्पति, प्रत्येक पदार्थ नियम में सदैव रहते हैं और अपने स्वरूप को कभी नहीं बदलते। जैसे आंख का देखना, कान का सुनना कभी नहीं बदलता और मृत्यु के उपरान्त दूसरे जन्म में वहीं प्रतिक्रिया होती है, उसी को ईश्वरीय धर्म कहते हैं और मत देश काल परिस्थिति से बनते और मिटते रहते हैं। आर्यसमाज और वैदिक धर्म को छोड़कर आज सारा संसार मतों को धर्म मानकर धार्मिक अन्धविश्वास के पाटों मे पिस रहा है। महर्षि दयानन्द जी ने धर्म का वास्वतिक स्वरूप सबके सामने रखा और तमाम धार्मिक अन्धविश्वासों को समाप्त करने के लिये सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ लिखा और आर्यसमाज रूपी क्रान्तिकारी संगठन बनाया।

चतुर्थ चुनौती सामाजिक रूढिवाद को समाप्त करने की थी। हजारो वर्षो की गुलामी के कारण भारतीय समाज मे मानवता की भावना समाप्त हो रही थी, फलस्वरूप, दासप्रथा, दहेजप्रथा, सतीप्रथा, बलिप्रथा, जाति-पांति प्रथा, छुआ-छूत प्रथा, काल्पनिक देवताओं की पूजा प्रथा, शूद्रों और नारियों को न पढ़ाने की प्रथा, मृत्यु भोज, पिण्डदान प्रथा आदि अनेक घातक सामाजिक बुराइयों से भारत की जनता त्रस्त थी। महर्षि जी ने इस वेदना को समझा और उक्त तमाम बुराइयों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। उन्होंने हिन्दू को हिन्दू रहते नये रंग मे रंग दिया और सभ्य समाज की रूपरेखा बना दी। उसी को लेकर 20वीं शताब्दी राजनैतिक व सामाजिक नेताओं कार्य किया तथा भारत सरकार ने कानून का रूप दिया।

पंचम चुनौती राजनैतिक क्षेत्र मे रूढिवाद पर प्रहार किया। राजनैतिक क्षेत्र में जिसका राज चला आ रहा था वही ठीक है। यह रूढी विचार थे। महर्षि दुःखित मन से सत्यार्थप्रकाश मे लिखते हैं कि अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की कथा ही क्या कहानी, किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नही हैं, जो कुछ है सभी विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है, जब दुर्दिन आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पडता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता। "जो है ठीक है" इसी रूढीवादी भावना पर ऋषि दयानन्द जी ने धार्मिक सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र मे सीधी चोट की। इसलिए वह तमाम बुराइयों को मिटाने वाले पहले ऋषि हुए।

**नोट**-आज महर्षि दयानन्द जी द्वारा वैचारिक क्रान्ति को आर्यसमाज सम्पूर्ण विश्व में अपना परचम फहरा रहा है। एक दीप करोड़ों-करोड़ों दीपो कों प्रज्ज्वलित कर गया।

**संम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून ( उत्तराखण्ड )**
**मो० 9411512019, 9557641800**

# आवश्यक सूचना

**सभा से सम्बद्ध आर्यसमाज के समस्त अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि श्री कुलदीप भास्कर भजनोपदेशक ने सभा की सेवा से त्यागपत्र दे दिया है। आर्यसमाज के अधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा-दयानन्दमठ रोहतक के नाम से उन्हें कोई दानराशि न देवें। किसी भी प्रकार के लेन-देन के लिए आप स्वयं जिम्मेवार होंगे।**

**-रमेश आर्य, सभा-वेदप्रचाराधिष्ठाता**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में एक साथ 10,000 बालकों द्वारा यज्ञ करके वर्ल्ड रिकार्ड बनाया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में उमड़ा जनसैलाब।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली के लिए वाहनों को रवाना करते हुए वेद प्रचार मण्डल रोहतक के पदाधिकारी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में मुख्य यजमान के रूप में मा० रामपाल आर्य जी अपनी उपस्थिति देते हुए।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए माननीय श्री सुधांशु द्विवेदी जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए सार्वदेशिक महामंत्री श्री प्रकाश आर्य जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए दिल्ली आर्य सभामंत्री श्री विनय आर्य जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए सभामंत्री श्री उमेदसिंह शर्मा जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए माननीय श्री राजेन्द्र विद्यालंकार जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए आर्य वीर दल संचालक माननीय श्री आचार्य देवव्रत जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में माननीय श्री राजनाथ जी को सम्मानित करते हुए पदाधिकारी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में माननीय श्री नितिन गडकरी जी को सम्मानित करते हुए पदाधिकारी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अफ्रीकी मूल के बच्चों ने यज्ञ कर विहंगम दृश्य पेश किया।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में सभा पुस्तक स्टॉल के साथ सभा पदाधिकारीगण।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में लेजर शॉ का विहंगम दृश्य।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में ध्वजा रोहण करते हुए श्री धर्मपाल जी एम.डी.एच. मसाले व अन्य।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में योगासनों का विहंगम दृश्य।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में योगासनों का विहंगम दृश्य।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए माननीय स्वामी विदेह योगी जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में मंचपर अपनी उपस्थिति देते हुए सभा पदाधिकारीगण।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए माननीय श्री मनीष सीसोदिया जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में मंचपर अपनी उपस्थिति देते हुए सभी सभाओं के सभाध्यक्ष।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए माननीय आचार्य आर्य नरेश जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपनी कविता पाठ करते हुए मशहूर कवि श्री हरिओम पंवार जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपनी प्रस्तुति देते हुए कलाकार।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में विदेशी अतिथियों को सभा का कैलेंडर भेंट करते हुए मा० रामपाल आर्य व आचार्य सर्वमित्र आर्य।

# स्वामी दयानन्द जी को अपना गुरु और आर्यसमाज को धर्ममाता कहने वाले की कहानी

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

**"स्वामी दयानन्द सरस्वती जी मेरे गुरु हैं। मैंने संसार में केवल उन्हें गुरु माना है। वे मेरे धर्म के पिता**

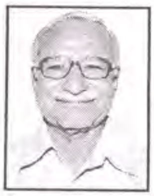

**हैं और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोदी में मैं पला। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रता पूर्वक विचार करना, बोलना और कर्त्तव्य पालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक संस्था में बद्ध होकर नियमानुवर्तिता का पाठ दिया।"**

ये विचार थे उस महामानव के जो ऋषि दयानन्द जी को अपना आचार्य मानते हुए तथा अपने को गर्व के साथ एवं स्पष्ट रूप से आर्यसमाजी घोषित करते हुए स्वदेशी एवं स्वराज्य की भावना से पूरित हो राष्ट्र की स्वाधीनता के क्षेत्र में अवतीर्ण हुआ जिसे लोग पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के नाम से जानते हैं। ऋषि दयानन्द जी की प्रेरणा से वह नरकेसरी पुरुष देश को मिल सका, जो कि वाणी का जादूगर था तथा जिसकी दहाड़ से लन्दन की पार्लियामेंट की दीवारें, बर्तानवी राज की चूलें तक हिल जाया करती थी।

**जन्म**-आपका जन्म 28 फरवरी 1865 को अपने ननिहाल के गांव ढूंढ़िक जिला फरीदकोट (पंजाब) में हुआ। आपके पिता लाला राधाकृष्ण जी अग्रवाल उर्दू, फारसी के अच्छे जानकार एवं अध्यापक का कार्य करते थे। आपके पिताजी एक धार्मिक व्यक्ति थे। आप पर पिताजी की धार्मिक प्रवृत्ति का बहुत प्रभाव पड़ा। आप आर्यसमाज के सदस्य बन गये क्योंकि आप आर्यसमाज के राष्ट्रीय एवं सामाजिक आन्दोलनों से बहुत प्रभावित हुए थे। आप अछूतोद्धार, शिक्षा एवं समाज के अनेक कार्यों में सक्रिय रहे। अपनी निर्भीकता तथा दृढ़ संकल्प के कारण 'पंजाब केसरी' तथा 'शेरे पंजाब' की उपाधियों से विभूषित हुए।

**आर्यसमाज में प्रवेश की कथा**-1882 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी आर्यसमाज लाहौर के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित हुए। इस मार्मिक प्रसंग का वर्णन लाला जी ने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार किया है-"उस दिन स्वर्गीय लाला मदनसिंह जी बी.ए. (डी.ए.वी. कालेज के संस्थापकों में प्रमुख) का व्याख्यान था। वे मुझसे बहुत प्रेम करते थे। उन्होंने व्याख्यान देने से पूर्व आर्यसमाज मन्दिर की छत पर अपना लिखा हुआ व्याख्यान सुनाया और मेरी सम्मति पूछी। मैंने उस व्याख्यान को बहुत पसन्द किया था। जब मैं छत से नीचे उतरा तो लाला साईं दास जी (आर्यसमाज लाहौर के प्रथम मंत्री) ने मुझे पकड़ लिया और अलग से जाकर कहने लगे कि हमने बहुत समय तक इन्तजार किया है कि तुम हमारे साथ मिल जाओ। मैं उस घड़ी को भूल नहीं सकता। मैंने उत्तर दिया कि मैं तो आपके साथ हूँ। उन्होंने उसी समय आर्यसमाज के सभासद बनने का प्रार्थना-पत्र मंगवाया और मेरे सामने रख दिया। मैं दो-चार मिनट तक सोचता रहा, परन्तु उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे हस्ताक्षर लिए बिना तुम्हें जाने नहीं दूँगा। मैंने ज्यों ही उस पर हस्ताक्षर किये तो मैंने उनके चेहने पर प्रसन्नता की ऐसी झलक देखी जैसे कि उन्हें हिन्दुस्तान की बादशाहत मिल गई हो। उन्होंने एकदम पंडित गुरुदत्त जी को बुलाया और सारा हाल सुनाकर मुझे उनके हवाले कर दिया। वे भी मुझसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। लाला मदन सिंह के प्रवचन के पश्चात् मेरा और पंडित गुरुदत्त जी का व्याख्या कराया गया। लोगों ने हम दोनों के व्याख्यान की बहुत प्रशंसा की। खूब तालियाँ बजी और इन तालियों ने मुझ पर जादू-सा प्रभाव डाला। यह थी मेरी आर्यसमाज में प्रवेश की कथा।"

**वकालत के क्षेत्र में**-अपने पैतृक गांव जगराँव में एक मुख्तार (छोटे वकील) के रूप में वकालत प्रारम्भ की, कस्बा छोटा था, वहाँ कार्य बढ़ने की अधिक संभावना नहीं थी। अत: रोहतक, हिसार तथा 1892 में लाहौर आ गये। यों तो लाला जी ने समाजसेवा के कार्य हिसार में प्रारम्भ किये थे परन्तु लाहौर (जो कि इस समय सार्वजनिक गतिविधियों का केन्द्र बन चुका था) में आकर आप सार्वजनिक एवं आर्यसमाज द्वारा चलाये गये सामाजिक सुधारों एवं राजनैतिक आन्दोलन में भी सक्रिय हो गये।

**राजनीति में प्रवेश**-आप 1888 में इलाहाबाद

अधिवेशन में सम्मिलित हुए, 1906 में पं० गोपालकृष्ण गोखले जी के साथ कांग्रेस के शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में इंगलैण्ड गये। वहाँ से अमेरिका गये। उन्होंने कई बार विदेश यात्राएं कीं और वहाँ रहकर पश्चिमी देशों के समक्ष भारत की वास्तविक राजनैतिक परिस्थिति से परिचित कराया।

**स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रियता**–'गदरपार्टी का इतिहास' नामक पुस्तक के लेखक श्री प्रीतम सिंह पंछी लाला जी के सम्बन्ध में लिखते हैं–भारत के स्वाधीनता प्रेमियों ने 'बान्धव समाज' नामक एक गुप्त संस्था का निर्माण किया था जिनको बाहर से सहायता पहुँचाने वालों में लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, सरदार अजीत सिंह आदि प्रमुख थे। ऋषि दयानन्द सरस्वती जी के इस प्रमुख शिष्य के कांग्रेस में प्रवेश करते ही कांग्रेस की विचारसरणी तथा कार्यकलाप की धारा ने एक नई दिशा में मोड़ ले लिया, यही कारण है कि भारतीय स्वतन्त्रता युद्ध के महारथियों की त्रिपुटी (बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपतराय) में इनका नाम गौरव के साथ लिया जता है। आर्यसमाज के लिए इससे अधिक गौरव की बात और क्या हो सकती है कि सन् 1907 का भयंकर समय था जबकि अंग्रेजी सरकार को यह संदेह हो गया कि पंजाब के अन्दर लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह के नेतृत्व में आर्यसमाज के कई हजार स्वयंसेवक 1857 के स्वातन्त्र्य संग्राम की अर्धशताब्दी मनाएंगे और अंग्रेजी सरकार के प्रति बग़ावत करेंगे। वहाँ कई स्थानों पर लालाजी ने अपने व्याख्यानों से पूरे पंजाब (हरियाणा, पंजाब, हिमाचल) में राजनैतिक गर्मी की लहर उत्पन्न कर दी। दस मई का दिन निकट आ रहा था, अंग्रेजों को अपनी भावी मौत निकट आती दिखाई दे रही थी। ब्रिटिश सरकार ने भावी संकट से बचने के लिए 9 मई को प्रात: ही अचानक दोनों ही आर्यनेताओं को गिरफ्तार कर लिया और बिना मुकदमा चलाये दण्डस्वरूप किसी अज्ञात स्थान पर भेज दिया। इतना होने पर भी अंग्रेज सरकार मन ही मन इतनी घबराई हुई थी कि दस मई की रात को होने वाले कत्लेआम से सुरक्षित बच निकलने के लिए लाहौर के सारे अंग्रेज परिवार किले में एकत्रित होकर बेचैनी के साथ समय व्यतीत करते रहे, दूसरी ओर रातभर रेलवे स्टेशन पर एक स्पेशल सवारी गाड़ी खाली छोड़ धुआं छोड़ती रही, वह इसलिए कि यदि कत्लेआम हुआ तो सारे ही अंग्रेज परिवार उसमें बैठकर जान बचाने के लिए सकुशल पंजाब से बाहर जा सकेंगे।

**अंग्रेज सरकार को लाला जी से भय**–श्री अलगू राय शास्त्री जी ने लाला लाजपतराय जी की जीवनी लिखते हुए कहा है, ''राष्ट्र के इस वीर पुजारी को कितना भयानक समझा गया कि यह इस बात से स्पष्ट है कि लाला जी को अपने निर्वासन काल में एक यूरोपियन अधिकारी ने बताया कि आपको सेनाओं की राजभक्ति में हस्तक्षेप करने के कारण दूसरा नाना साहब समझा गया है। इतना भयानक जानकर ही लालाजी को बिना मुकदमा चलाये माण्डला के किले में अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिया गया। जब लालाजी को स्पेशल गाडी से माण्डला ले जाया जा रहा था, तब विद्रोह हो जाने की आशंका से लालाजी को पंजाब से बाहर निकालकर अवध रुहेलखण्ड पहुँचने पर ही अपने डिब्बे की खिड़कियाँ खोलने की आज्ञा प्रदान की गई। पाठकगण! निश्चय से गोराशाही की आंखों में इतना अधिक भयानक होने का गौरव ऋषि दयानन्द जी के इसी अमर शिष्य को प्राप्त हुआ, क्या यह कम गौरव की बात है।''

**माण्डले से वापिस आने पर**–आपने माण्डले से वापिस अपने देश में आकर पूरे देश का भ्रमण किया और पूरे देश के युवकों को अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्तिकारी कार्यों की प्रेरणा दी। प्रथम विश्वयुद्ध के समय आपको पुन: निर्वासित करके अमेरिका भेज दिया गया। वहाँ भी आपने प्रवासी भारतीयों को संगठित किया और 'यंग इंडिया' नामक समाचार पत्र निकालकर अंग्रेजी शासन का भंडाफोड़ किया तथा भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के लिए अमेरिकी जनता का समर्थन प्राप्त किया। सन् 1923 में आप केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गये। इसी विधान सभा में इन्होंने साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव रखा जो निर्वाचित सदस्यों के भारी बहुमत से 'वन्दे मातरम्' के नारे के साथ स्वीकृत हुआ।

**साइमन कमीशन का विरोध**–सन् 1922 में अहसयोग आन्दोलन स्थगित हो गया था। स्वराज्य पार्टी का गठन हुआ, परन्तु वह भी अपने पूर्व घोषणाओं के अनुसार न तो विधानसभाओं का अन्त करा सकी और न ही उन्हें सुधार सकी। कांग्रेस कोई निर्णय नहीं ले पा रही थी। जनता बड़ी दुविधा में थी, परन्तु लालाजी के व्याख्यानों ने जनता का अंग्रेज सरकार के प्रति विद्रोह बढ़ता जा रहा था। ब्रिटिश सरकार जनता की इस सुगबुगाहट को देख और समझ रही थी कि अब कुछ न कुछ भयंकर होने वाला है। जनता की

सहानुभूति क्रान्तिकारियों के प्रति बढ़ रही थी। इस स्थिति से निपटने के लिए वायसराय ने 8 नवम्बर 1927 को घोषणा की कि भारत की स्थिति का अध्ययन करने के लिए लार्ड साइमन की अध्यक्षता में एक सदस्यीय कमीशन भारत आ रहा है। यह कमीशन स्थान-स्थान पर जाकर एक रिपोर्ट तैयार करेगा और भारत में सुधारों के लिए सिफ़ारिश करेगा। कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य न होने के कारण इसका विरोध प्रारम्भ हो गया। सारे देश में इस राष्ट्रविरोधी कमीशन के बहिष्कार करने का निश्चय किया गया।

सबसे पूर्व बम्बई में 'साइमन गो बैक' के नारों के साथ ऐसा भयानक प्रदर्शन हुआ कि ब्रिटिश सरकार घबरा गई। बम्बई के पश्चात् दिल्ली, मद्रास, कलकत्ता में 'साइमन गो बैक' के नारों से ब्रिटिश सरकार की स्थिति और खराब हो गई। जब साइमन कमीशन लाहौर पहुँचा तो उस दिन पूरे नगर में हड़ताल हुई, चारों ओर काले झण्डों से उनका स्वागत किया गया। लाहौर में साइमन कमीशन का विरोध नौजवान भारत सभा के नेतृत्व में हो रहा था। वीर भगत सिंह स्वयं लाला लाजपतराय जी के पास गये और उन्हें नौजवान भारत सभा के प्रदर्शन का नेतृत्व करने के लिए आग्रह किया। लाला जी की स्वीकृति के पश्चात् वे नौजवान लाला जी को लाहौर स्टेशन पर लेने के लिए पहुँच गये। लालाजी उस समय साक्षात् क्रान्ति की प्रतिमा लग रहे थे। पुलिस लाला जी तथा नौजवान भारत सभा के सदस्यों को खदेड़ने का पूरा प्रयास कर रही थी परन्तु लालाजी का मोर्चा अविजित रहा। जब मामूली लाठीचार्ज से मोर्चा नहीं टूटा तो पुलिस कप्तान स्कॉट ने लामबन्द होकर मोर्चे पर कठोर आक्रमण करने के आदेश दे दिये तो पुलिस कप्तान स्काट का आदेश पाते ही सहायक पुलिस कप्तान एस.पी. साण्डर्स ने लाठियों से सामने की भीड़ पर बड़ी क्रूरता से आक्रमण किया और पुलिस बर्बरतापूर्ण ढंग से भीड़ को रौंदती हुई आगे बढ़ गई। साण्डर्स की एक लाठी लाला जी के सिर पर तनी छतरी पर और दूसरी लाठी का भरपूर वार उनके कंधे पर पड़ा।

उसी सायंकाल कांग्रेस की ओर से मोरी दरवाज़े के पास मैदान में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन धारा-144 को तोड़कर की गई। इस सभा में लाला जी ने प्रातःकाल की घटना की निंदा करते हुए ब्रिटिश सरकार को चेतावनी दी, ''जो सरकार निहत्थी प्रजा पर इस प्रकार अत्याचार करती है, वह सरकार असभ्य और जंगली है। ऐसी सरकार अब अपने जाने के दिन गिन ले'' इसके साथ ही उन्होंने घोषणा की, "I decdare that the blows hurled at me will be the last natile in the coffin of the British Rule un India. अर्थात् मैं घोषणा करता हूँ कि मुझ पर पड़ी हुई एक-एक लाठी ब्रिटिश सरकार के कफ़न में अन्तिम कीलों का काम देगी।''

साइमन कमीशन भारत का दौरा करने चला गया परन्तु उस लाठी के प्रहार के कारण 17 नवम्बर 1928 को लाला जी का देहान्त हो गया। लाला जी की मृत्यु होते ही जनभावना अंग्रेज सरकार के विरुद्ध तूफान बनकर भड़क उठी। यह तूफान किसी के रोके न रुका। लालाजी की अर्थी के साथ अन्त्येष्टि कार्यक्रम में लगभग डेढ़ लाख लोग सम्मिलित हुए। वे सब लोग ऐसे रो रहे थे जैसे कोई उनका सगा-सम्बन्धी अन्तिम विदाई लेकर चल पड़ा हो। भारत की इस स्वातन्त्र्य वेदी पर अपने जीवन की आहुति देकर पूरे राष्ट्र को प्रेरित करने के लिए संभवतः इस भारतमाता के पुत्र ने जन्म लिया था।

**लालाजी का व्यक्तित्व**-लालाजी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक साथ ही उत्कृष्ट वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, सेवाभावी, समाज सेवक, राजनैतिक नेता, शिक्षा शास्त्री, चिन्तक, विचारक तथा दार्शनिक थे। लालाजी के बलिदान के पश्चात् देशबन्धु चितरंजनदास की धर्मपत्नी श्रीमती वसन्ती देवी ने एक वक्तव्य प्रसारित कर कहा था, ''क्या देश में कोई ऐसा क्रान्तिकारी युवक नहीं है जो भारत केसरी लाला जी की मृत्यु का बदला ले सके।'' जब यह बात सरदार भगत सिंह तक पहुँची तो उसने लालाजी पर लाठियों का प्रहार करने वाले साण्डर्स को मारकर उस देशभक्त की मृत्यु का बदला ले लिया। लाला लाजपतराय जी देश के स्वाधीनता संग्राम के महान् सेनानी थे। देशवासी उनके त्याग और बलिदान को सदैव स्मरण रखेंगे। उनके बलिदान से प्रेरणा लेकर असंख्य युवकों ने अपनी सुख-सुविधाओं वाले जीवन को त्याग कर देश के लिए सर्वस्व अर्पण करने और किसी भी मूल्य पर स्वतन्त्रता प्राप्त करने का मार्ग अपनाया। जीवन भर जिन सिद्धान्तों के लिए वे संघर्ष करते रहे, उन्हीं सिद्धान्तों की पूर्ति के लिए अपनी मृत्यु से लाखों युवकों को प्रेरित करते हुए भारत माता के 'लाल' अमर हो गये।

**सम्पर्क-4/45 शिवाजी नगर, गुरुग्राम चलभाष 9911197073**

# यज्ञशाला

❑ यश वर्मा, मन्त्री आर्यसमाज, मॉडल टाउन, यमुनानगर 9416446305

यह सारा संसार, सारा ब्रह्माण्ड उस प्रभु, उस परम पूजनीय परमपिता परमेश्वर की यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश सभी मिलकर आहुतियां डाल रहे हैं प्रभु के यज्ञ में। सब इस यज्ञ में यजन कर रहे हैं। इस यज्ञ द्वारा प्राणिमात्र का पालन-पोषण हो रहा है। सूर्य प्राणिमात्र को जीवन प्रदान कर रहा है, जल रस दे रहा है अग्निरूप में, वहीं चन्द्र साथ-साथ शीतलता प्रदान कर रहा है। जल रस दे रहा है। पृथ्वी तो सबका आधार है ही। वायु हमारे प्राण हैं तो आकाश हमें स्थान दे रहा है गति के लिए। वनस्पति जगत् को देखिए, कितने प्रकार के फल-फूल, मेवे, अन्न, सब्जियां, औषधियां, अनेक प्रकार के स्वाद, रस, गन्ध, गुण लिए हुए हैं। कहीं घने जंगलों से भरे हुए पर्वत हैं तो कहीं पर बर्फ से ढके हुए पर्वत। मानो प्रकृति ने सफेद चादर ओढा दी हो पर्वतों को। कलकल करती हुई नदियां मानो प्रभु का गुणगान करती हुई, ऊँचे पर्वतों से चलकर मैदानों में आ रही हैं हरियाली बिखेरने खेतों के अन्दर, हमारे घरों को अन्न से भरने के लिए। एक ओर वनस्पति जगत् है तो दूसरी ओर सोने, चांदी, हीरे, लोहे, कोयले न जाने कितने प्रकार के पदार्थ भर दिए प्रभु ने इस पृथ्वी में। समुद्र में अथाह जल राशि है और न जाने कैसे-कैसे जीव और साथ कितना ऐश्वर्य भर दिया। सीप, मोती, मूंगे, रत्न आदि के रूप में। कैसे सैकड़ों-हजारों मील से वह जलराशि वर्षा के रूप में हमारे पास, हमारे घर, खेत में आ जाती है हमें खुशी व ऐश्वर्य देने के लिए। प्रभु की इस सुन्दर सुखद यज्ञशाला में नाना प्रकार के कीट-पतंग, पशु-पक्षी, मानव, वनस्पति सब किसी ने किसी रूप में एक-दूसरे के सहायक बने हुए हैं। यह सब प्रभु का यज्ञ ही तो चल रहा है इस संसार रूपी यज्ञशाला में।

जिस प्रकार प्रभु की यह सुन्दर यज्ञशाला है, इसी प्रकार हमारा यह मानव शरीर भी एक अनुपम यज्ञशाला है। यजुर्वेद का एक मंत्र है-

**ओ३म् सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे,**
**सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्।**
**सप्त आपः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र**
**जाग्रतो अस्वपनप्रजौ सत्र सदौ च देवौ॥** (यजु० 34/55)

इस सुन्दर मन्त्र का अर्थ है कि शरीर में सात ऋषि स्थापित हैं, जो इस यज्ञशाला की प्रमाद रहित होकर रक्षा करते रहते हैं। सुषुप्त अवस्था में यह सात ज्ञान प्रवाह अपने लोक में लीन हो जाते हैं। तब भी यज्ञ में बैठे रहने वाले देव, कभी न सोने वाले, जागते रहते हैं।

यह जो हमारा मानव देह है, यह एक पवित्र यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में सात ऋषि यजन कर रहे हैं। ये सात ऋषि कोई और नहीं हैं बल्कि हमारे आंख, नाक, कान, रसना, त्वचा, मन और बुद्धि हैं। इनका कार्य है, रूप, गन्ध, श्रवण, रस, स्पर्श, मनन व अवधारणा (निश्चय)। यह ज्ञान शक्तियां प्रभु ने इस देह में यजन के लिए प्रदान की हैं। जाग्रत अवस्था में ये सातों ऋषि यजन करते रहते हैं, कभी आंख नहीं कहती कि मैं नहीं देखती अथवा मन नहीं कहता कि मैं आज मनन नहीं करूँगा। सातों ऋषि निरन्तर कार्यरत रहते हैं। स्वप्नावस्था में भी अपना-अपना कार्य करते रहते हैं। लेकिन सुषुप्ति अवस्था में ये अपने-अपने लोक में लीन हो जाते हैं। ऐसे समय में भी दो देव इस देह में ऐसे हैं जो जन्म के भी पहले से और मृत्यु पर्यन्त सदैव यजन करते रहते हैं। वे दो देव हैं आत्मा व प्राण। आत्मा का कार्य है दर्शन शक्ति अथवा ज्ञान शक्ति। प्रगाढ़ निद्रा आने पर हम प्रातः उठकर कहते हैं कि आज बड़ी अच्छी नींद आई। यह ज्ञान आत्मा को ही तो होता है। प्राण, निद्रा में भी प्राणशक्ति प्रदान करता है तभी तो हमारे में पुनः कार्य करने की शक्ति आ जाती है। थके हारे सोते हैं व प्रातःकाल तरोताजा उठते हैं।

परमात्मा की यज्ञशाला को तो मानव ने बहुत प्रदूषित कर दिया है। चाहे वह वायु हो, चाहे जल हो या आकाश मण्डल हो या पृथ्वी हो, किसी को नहीं छोड़ा। बहुत ही विचारणीय प्रश्न है मानव के लिए। अन्यथा प्रकृति तो अपना भयावह रूप दिखाएगी ही।

परमात्मा ने ये सात शक्तियां दी हैं मानव को यजन के लिए। भोग तो पशु भी भोग रहे हैं इस प्रकृति को। क्या मानव भी इसीलिए भेजा है संसार में प्रभु ने कि जा संसार को, प्रकृति को भोग ले। यदि कोई ऐसा सोचता है तो वह गलत है। प्रभु ने एक लक्ष्य देकर भेजा है हमें और वह है

प्रभु की प्राप्ति, भगवत प्राप्ति। तभी तो वेद का मन्त्र है- '**ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं०**' सौ वर्ष तक इन ऋषियों का यजन देखना, सुनना, मनन आदि प्रभु को पाने के लिए हो केवल भोग के लिए नहीं। जितना भोग करो वह भी त्यागभाव से हो।

विचारणीय बात तो यह है कि क्या ये ऋषि भगवद् यजन को छोड़ तो नहीं बैठे, इस संसार की चकाचौंध में, इस रंगीली दुनिया में। कहीं यह ऋषि पथभ्रष्ट तो नहीं हो गए। ये ऋषि पथभ्रष्ट न हों, इसीलिए हम गायत्री मंत्र में व अन्य कुछ मन्त्रों में जैसे-'**ओ३म् यां मेधा देवगणा०**' में प्रभु से बुद्धि की कामना करते हैं। हमारी बुद्धि पवित्र हो, सन्मार्ग पर चलने वाली हो। बुद्धि पवित्र रखने के लिए हम सत्संग, स्वाध्याय, प्रभु चिन्तन आदि का सहारा लेते हैं। यदि इसके ठीक विपरीत बुद्धि कुमार्ग की ओर चल पड़ी तो हमारी कामनाएँ बढ़ जाती हैं और कामना पूर्ण न होने पर व्यक्ति को क्रोध आता है। क्रोध से सर्वप्रथम तो व्यक्ति का चेहरा बिगड़ जाता है।

जब आप क्रोध में हैं तो एक बार शीशा देख लेना और फिर बताना मेरी बात ठीक है या नहीं। क्रोध से मूढ़ता बढ़ती है। क्रोध में किया गया कोई भी कार्य ठीक नहीं होता। क्रोध से भाषा बिगड़ जाती है। यहाँ तक बड़े-छोटे की तमीज नहीं रहती। पाचन क्रिया, ब्लडप्रेशर व दिल व दिमाग पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए जब भी क्रोध आए शुरू में ही थोड़ा-सा सम्भल जाओ। अच्छा बताइए सबसे अधिक क्रोध किस पर आता है? सोचने की आवश्यकता नहीं, सीधा-सा उत्तर है, पति-पत्नी को एक दूसरे पर। अपने रिश्ते बहुत कीमती हैं। क्रोध करके अपने रिश्ते मत बिगाड़ो। कोई गलतफहमी हो जाए तो शीघ्र दूर कर लो, कहीं ऐसा न हो कि बहुत देर हो जाये और फिर कई दिन, मास और वर्ष बीत जाएं। अपने दिमाग को खाली कर दो, विचारों को गुब्बारे की तरह हवा में उड़ा दो और कहो कि सब ठीक है, (All is well) सहज रहो, हर परिस्थिति में सहज रहना सीख लो। घर हो, कार्यालय हो, समाज हो, सड़क पर हो, मन्दिर में, स्टेशन पर हो, कहीं पर भी हो, भीड़ में हो या जंगल में हो, सहज रहना सीख लो। दो व्यक्ति एक जैसी परिस्थिति में होते हैं परन्तु एक सहज होता है तो दूसरा असहज, क्योंकि उनकी मन की स्थिति भिन्न-भिन्न है।

अपनी मन:स्थिति ठीक रखने के लिए हमें प्रभुमय बनना होगा जिससे हमारा वस्तुओं से, रिश्ते-नातों से, सुख-दु:ख से मोह नष्ट होने लगेगा। हमारे अच्छे विचार-संस्कार बनेंगे। एक सभा के अन्दर एक विद्यार्थी महात्मा जी से पूछता है कि यदि मैं चोरी करके देशी घी खाता रहूँ तो क्या मेरे अन्दर शक्ति-बल नहीं आएगा? महात्मा जी उत्तर देते हैं कि बेटे तेरे में बल तो आ जाएगा लेकिन चोरी का घी तुझे चोर बना देगा और आगे जाकर तू डाकू भी बन सकता है, चोर-डाकू का परिणाम तो तू जानता ही होगा। इसलिए हम अपनी कामनाओं और क्रोध पर नियन्त्रण रखते हुए, अपने मन की स्थिति को शान्त बनाएं, रखें व अच्छे विचारों के साथ संस्कारी बनें। हर परिस्थिति में समन्वित (Adjustment) करना सीख लें तो सुखी हो जायें। इसका अभिप्राय ऐसा नहीं कि इतना झुक जाएं कि लोग हमें तोड़ दें। जैसे एक सांप था सबको काटता था। शिवजी ने उसे कहा कि तुम लोगों को काटा मत करो। सांप नीचे लेट गया किसी को काटता नहीं था, लोगों ने उसके ऊपर से निकलना, फिर पैर रखकर निकलना प्रारम्भ कर दिया। सांप घायल हो गया, फिर शिवजी आए और उससे पूछा, यह क्या हो गया? तब उसने अपनी व्यथा सुनाई। तब शिवजी ने कहा, मैंने यह तो नहीं कहा था कि फुफकारना छोड़ दो। कहने का भाव है कि जीवन में थोड़ा झुकना, थोड़ा तनना सीख लो। जैसे सितार को न बहुत अधिक कसा जाता है न बहुत ढीला किया जाता है, बस ट्यूनिंग की जाती है, इसी तरह हम भी अपने जीवन की यम-नियम के द्वारा ट्यूनिंग कर लें। थोड़ा अपने जीवन में लोकव्यवहार में निपुणता हासिल कर लें। हम अपने हाथ की ओर देखें जो हमें कर्म व धर्म को साथ मिलकर चलने की शिक्षा दे रहा है। हाथ की चार उंगलियां कर्म का और अंगूठा धर्म का द्योतक है। जब चारों उंगलियों और अंगूठा अर्थात् कर्म और धर्म साथ-साथ चलते हैं तो जीवन सफल हो जाता है। हमारे जीवन में केवल स्वार्थ न हो बल्कि परमार्थ की भावना हो। एक राजा के पास बीस अनमोल कृतियां थीं। एक कृति एक सेवक से टूट गई तो राजा ने उसे फांसी पर चढ़ा दिया। राजा ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो ऐसी कृति बना देगा उसे इनाम दिया जाएगा। एक व्यक्ति आया राजा के पास और कहा कि मुझे उन्नीस कृतियां दिखाई जाएं। उसे वे

**क्रमशः पृष्ठ 16 पर......**

# दीपावली पर जब दीप जले

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

दीपावली पर जब दीप जले तो संसार के श्रेष्ठ, धर्मात्मा, परोपकारी मनुष्यों को ऋषि दयानन्द की याद अवश्य आई होगी और आनी भी चाहिए। अच्छे स्वभाव के मनुष्य तो

वैदिक धर्म से भिन्न भी मिल सकते हैं, लेकिन वैदिक धर्म के ज्ञान के बिना, वे अनेक कल्याणकारी नियमों से विमुख होकर स्वयं का व अन्य का अपेक्षित उपकार नहीं कर पाते। ऋषि दयानन्द की जानकारी उनके सम्मुख वैदिक धर्म की झांकी प्रस्तुत करके उनका मार्ग प्रशस्त करती है। ऋषि दयानन्द के जीवन वृत्तान्त के अन्वेषण में 15 वर्ष लगाने वाले श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय इस संदर्भ में लिखते हैं, "**हमने अपने ऊपर यह भार केवल इसलिए लिया है कि हमारा विश्वास है कि हिन्दू जाति के अभ्युत्थान और वैदिक धर्म की उन्नति दयानन्द के जीवनवृत्त की सम्यक् आलोचना के बिना नहीं हो सकती।**"

ऊपर हमने उल्लेख किया है कि अच्छे स्वभाव वाले मनुष्य के लिए वैदिक धर्म की जानकारी आवश्यक है, उसी भांति जिसे वैदिक धर्म की जानकारी है, उसके लिए अच्छे स्वभाव का होना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं तो हम धार्मिक क्षेत्र में ही अराजकता फैलाने वाले बन जाते हैं। धर्मात्माओं को पीड़ा पहुँचाकर हम धर्म की उन्नति में बाधक बनते हैं। ऋषि दयानन्द हमें '**मनुष्य**' बनने की सार्थक शिक्षा दे गए। अतः उनकी याद आती है और दीपावली पर जब दीप जलते हैं तो उनकी विशेष याद आती है।

'**दीपावली**' पर जब प्रदूषण की सर्वत्र चर्चा होती रहती है तो दयानन्द की शिक्षाओं में हमें इसका निदान, उपचार मिल जाता है। '**संस्कारविधि**' के गृहाश्रम प्रकरण में नव अन्न आने पर जो खेत में '**यज्ञ**' करने की शिक्षा है, क्या वह इस समस्या का समाधान नहीं है? ऐसे समय में '**यज्ञ**' जैसे शुभकर्म को करने वाला प्रदूषण फैलाने और नशा आदि से क्या दूर नहीं हरेगा?

'**समलैंगिकता**' वर्तमान में चर्चा का विषय रहा। सबने अपनी-अपनी योग्यतानुसार उसका खण्डन भी किया। लेकिन इस समस्या के मूल तक भी हमें ऋषि दयानन्द की शिक्षाएँ ही ले जाती हैं। ऋषि जी सन्तान उत्पत्ति के लिए स्त्री और पुरुष के लिए जो समय का निर्देश करते हैं, उस समय उसकी शारीरिक स्थिति का जो वर्णन करते हैं, बस उनकी इसी शिक्षा में इस समस्या का निदान व समाधान मिल जाता है। '**सुश्रुत**' ग्रन्थ में यह उल्लेख मिलता है कि जो रज:निवृत्ति के बिना संभोग करते हैं या गलत मुद्राएं बनाकर मैथुन करते हैं उनकी संतान '**समलैंगिक**' प्रवृत्ति की होती है। '**ब्रह्मचर्यप्रकाश-समलैंगिकता तिमिर भंजन**' पुस्तक लिखते हुए जब '**सुश्रुत**' से यह प्रमाण मुझे मिला तो ऋषि के प्रति मेरे हृदय में श्रद्धा सागर है वह हिलोरें लेने लगा।

जब मैं यह घटना आर्यसमाज के इतिहास शिरोमणि श्रीयुत राजेन्द्र 'जिज्ञासु' को बताई तो उन्होंने कहा कि जो श्रद्धा से स्वाध्याय करता है, ईश्वर उसकी सहायता करते हैं। पाठकगण! अब तक आपने समलैंगिकता के विषय में जो भी पढ़ा क्या यह उन सबमें एक नई जानकारी नहीं है? यह सब ऋषि के प्रति श्रद्धा का फल है।

संस्कृत के महाविद्वान् और गुजराती मातृभाषा होने पर भी '**हिन्दी**' को न केवल अपनाना, अपितु '**आर्य्यभाषा**' घोषित करना, यह ऋषि जी की राष्ट्रीय एकता के लिए अति गहन व दूरगामी सोच है। आज अनेक क्षेत्र हमने ऐसे जहाँ क्षेत्रीय भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी में तो स्थान आदि के बारे में लिखा मिलता है, लेकिन '**हिन्दी**' में नहीं। इसी का परिणाम हम भाषा व क्षेत्र के नाम पर झगड़ों के रूप में भुगत रहे हैं। अंग्रेजों के समय में ही शिक्षा के '**हण्टर कमीशन**' के सामने '**हिन्दी**' का पक्ष रखने के लिए ऋषि जी देश के प्रबुद्ध जनों को प्रोत्साहित करते हैं। मत-पन्थ के झगड़े हों, गिरते चरित्र व जातिवाद की समस्या हो या फिर खान-पान पर बहस हो, हर समस्या में ऋषि दयानन्द की शिक्षाएँ हमें रास्ता दिखाती हैं।

अनेक मनुष्य यह कहकर तालियाँ बटोर लेते हैं कि '**मनुष्य धर्म ही सबसे बड़ा है।**' लेकिन मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए कर्त्तव्य-कर्म कहाँ से और कौन निर्धारित करेगा? वे केवल वैदिक धर्म में ही तो मिलते हैं। ऋषि को कोई कहता है कि मैं किसी भी मत-पन्थ को नहीं मानता। ऋषि उसे अत्यन्त सहज उत्तर देते हुए कहते हैं कि यह भी एक मत है (कि आप ऐसा मानते हैं)। ऋषि की शिक्षाएँ, उनके जीवन चरित्र में वर्णित घटनाओं का निष्कर्ष हमें वैदिक धर्म से जोड़ता है। अन्त में हम इतना ही कहेंगे कि दीपावली के जब दीप जले तो यह अवश्य चिन्तन करें कि क्या हम दीपावली को जनमानस में '**ऋषि निर्वाण दिवस**' के रूप में भी स्थापित कर पाए हैं या नहीं? जब-जब दीपावली के दीप जलें तो यह चिन्तन अवश्य करें।

# महर्षि निर्वाण दिवस

आज मैं आपके सामने महर्षि दयानन्द के 135वें निर्माण निर्वाण दिवस पर हृदय से श्रद्धांजलि व्यक्त करती हूँ जिनकी वजह से आज समाज में हमारा अलग ही स्थान है, जिन्होंने हमें वैदिक पथ दिखलाया। वास्तव में हम ऋषि दयानन्द के उपकारों को कभी नहीं भूल सकते। हम यदि आज अपनी वर्तमान दशा को देखें तो प्रभुभक्त दयानन्द ने इस देश और समाज के लिए क्या-क्या नहीं किया। हम विचार करें कि दयानन्द ने वेदों के द्वार सबके लिए न खोले होते, नारी जाति की दुर्व्यवस्था का खण्डन न किया होता, शूद्रों, दलितों का उद्धार न किया होता तो आज हमारी क्या दशा होती?

एक समय था जब हमारा देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था तब सर्वप्रथम स्वराज्य का बिगुल बजाने वाला कोई और नहीं बल्कि ऋषि दयानन्द ही थे। इन्होंने क्रान्ति का बीज बोया। वही बीज वीर क्रान्तिकारियों के रूप में प्रस्फुटित हुआ जो सबको हिला गए। लेकिन इस क्रान्ति के सूत्रधार तो दयानन्द ही थे, जिन्होंने अपने बलिदान से सारी दुनिया में क्रान्ति मचा दी। यही नहीं इन्होंने गुरुकुल पद्धति, आर्ष पद्धति को पुनः वास्तविक रूप में स्थापित किया। वैदिक संस्कृति की रक्षा की। वेदों पर भाष्य किया जिन पर आज अनेक विद्वान् शोध कर रहे हैं।

मानव को उसके असली उपास्य की पहचान कराई जो मूर्ति में नहीं बल्कि सबके हृदय में वास करता है। मानव को मानव बनना सिखाया। उसे उसके अस्तित्व की पहचान कराई। स्वावलम्बी बनाया। यही नहीं उस समय नारी जाति जिसको पैरों की जूती समझा जाता था, उसे न वेद पढ़ने का अधिकार था, न सुनने का। यदि कोई भूल से सुन भी लेती थी तो उसके कानों में सीसा पिघलाकर डाल दिया जाता था। इस स्थिति को सुधारने के लिए यदि किसी ने सबसे पहले आवाज उठाई तो वह कोई और नहीं ऋषि दयानन्द ही थे। यदि आज भी समाज में नारी पर अत्याचार हो रहे हैं तो उसके जिम्मेदार हम सब हैं। और जो ये सब करते हैं तो उसको महर्षि दयानन्द का भक्त कहलाने का अधिकार नहीं है।

जरा सोचिये, यदि समाज में नारी नहीं होगी तो इस समाज का क्या होगा? एक नारी के दिल की आवाज सुनो कि एक नारी क्या होती है-

कौन हूँ मैं? कहाँ से आई हूँ मैं? भगवान् ने भेजा है मुझे, बेकसूर लड़की न्यारी हूँ मैं। जिसने मुझे जन्म दिया, मुझ पर अपना प्यार लुटाया, उस देवीस्वरूपा माँ की दुलारी हूँ मैं। जिसने मुझे पाला-पोसा, मुझे अच्छे संस्कार दिये, उस पिता के सुन्दर सपनों की क्यारी हूँ मैं। जिसने मुझे प्यार दिया, हर राह पर मेरी हिम्मत बढ़ाई, उस भाई को राखी बाँधने वाली बहना प्यारी हूँ मैं। जिसने मेरा हाथ थामा, जीवन भर साथ निभाने का वायदा किया, उस पति की अर्धांगिनी, उसकी पूजा करने वाली पुजारिन हूँ मैं। जिसने मुझसे जिंदगी पाई, मेरे अन्दर ममता जगाई, उस बच्चे की माँ, उसके जीवन की मुश्किलों को जलाने वाली चिंगारी हूँ मैं। हर खुशी देती हूँ, हर रिस्ता निभाती हूँ। फिर क्यों अभी भी एक दुखियारी हूँ मैं। क्यों मुझे दुत्कारा जाता है? क्यों मुझे जला दिया जाता है? क्यों मुझे जन्म लेने से रोका जाता है? क्या सिर्फ इसलिए कि एक नारी हूँ मैं?

अन्त में यही कहना चाहूँगी कि इन सब कुरीतियों को, अत्याचारों को खत्म करने के लिए ऋषि दयानन्द अकेले ही रणभूमि में डटे रहे। क्या आज हम सब संगठित होकर यह सब नहीं कर सकते? यदि हम आस्तिकता को धारण कर, अपनी बुराइयों को अपने भीतर से निकाल फैंकें तो दुनिया की कोई ताकत नहीं जो हमें हरा सके। यह सब करने के लिए त्याग और तप की आवश्यकता है। कविवर प्रकाश रत्न जी ने लिखा है-'**बिन तपस्या त्याग से किसने काहे प्रिय ध्येय पाया।**' कोई भी व्यक्ति बिना तपस्या और त्याग के कुछ नहीं कर सकता। यदि एक वृक्ष को देखें तो वह तप करते हुए फलीभूत होता है।

अतः परोपकार करने से पहले हमें स्वयं को इस योग्य बनाना होगा कि हम किसी को कुछ दे सकें, किसी के काम आ सकें। किसी ने कितना अच्छा कहा है-'**जब व्यक्ति दूसरों के लिए तप करता है तो स्वाहाकार होता है और वही जब दूसरों से अपने लिए तप करवाता है तो हाहाकार होता है।**' इसके लिए अमें अभी से तैयार होना होगा, क्योंकि '**न श्वः श्वमुपासीत को हि मनुष्यस्य श्वो वेद**' अर्थात् कल की उपासना को छोड़ो कल किसने देखा। जो कल का इंतजार करते हैं उसके लिए कल कभी नहीं आता।

इसीलिए ऋषि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए हमें अभी से तैयार होना होगा। ऋषि दयानन्द के मार्ग का अनुसरण करना होगा ताकि माँ-भारती फिर से जगजननी के नाम से पुकारी जाए।

**-कुमारी रविता ( स्नातिका, गुरुकुल चोटीपुरा )**
**गांव गोयला कलां, जिला झज्जर**

## गांव मातण्ड के खेत में यज्ञ

दिनांक 5.11.2018 सोमवार के दिन गांव मातण्ड तहसील गोहाना जिला सोनीपत में महाशय बलवीर सिंह आर्य के खेत में ग्रामीणों के सहयोग से नए अन्न के आने के अवसर पर यज्ञ किया गया। इसका निर्देश स्वामी दयानन्द ने अपनी पुस्तक संस्कारविधि में दिया है। इस कार्य को करने के लिए काफी सोच-विचार किया गया परन्तु किसी ने उत्साह नहीं दिखाया। हमने अन्त में महाशय बलवीरसिंह आर्य से आग्रह किया तो एकदम सहर्ष स्वीकार कर लिया और कहा कि आपको सभी समिधाएँ खेत से उपलब्ध करवायेंगे। अपने पूरे परिवार व कुछ ग्रामीणों के साथ महाशय जी सुबह खेत में पहुँच गये थे। महिलाएँ भी काफी संख्या में उपस्थित थीं। कार्यक्रम का आरम्भ गायत्री मंत्र एवं ओ३म् के भजन से किया गया। आचार्य अभय आर्य जी ने स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित संस्कारविधि के नए अन्न पर प्रकाश डाला और जीवन निर्माण की कुछ चर्चा हुई। इसके बाद खेत में ही देशी घी के हलवे का प्रसाद व दुग्ध से जलपान की व्यवस्था की गई। सभी किसानों को महाशय बलवीर से प्रेरणा लेनी चाहिए नए अन्न पर यज्ञ (खेत में) अवश्य करायें।

**–जगदीश आर्य, डीपीई, आर्य बाल भारती स्कूल, पानीपत**

## शोक-समाचार

श्री हरफूल श्योराण सदस्य आर्यसमाज सिरसा का देहान्त 23.10.2018 को 60 वर्ष की आयु में हो गया। वे आर्यसमाज के कार्यों में बहुत सहयोग देते थे। शान्तियज्ञ व श्रद्धांजलि सभा दिनांक 31.10.2018 को उनके निवास स्थान पर किया गया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। **–जगदीश सींवर, सिरसा**

## शोक-समाचार एवं प्रधान पद की नियुक्ति

दुःखी हृदय से सूचित किया जाता है कि 9.10.2018 को आपकी प्यारी आर्यसमाज मन्धार जिला यमुनानगर के प्रधान श्री श्यामसिंह आर्य का आकस्मिक निधन हो गया है जिनकी उम्र 65 वर्ष थी। वे पिछले 20 वर्षों से आर्यसमाज मन्धार के प्रधान थे। उनका स्वभाव बहुत शान्त, लोकप्रिय और ईमानदार था। वे एक मेहनती किसान भी थे। उन्होंने तन-मन-धन से आर्यसमाज की बहुत सेवा की। उनकी मृत्यु का गांव में बहुत शोक है। आर्यजगत् के इस कर्मठ कार्यकर्त्ता की अचानक मृत्यु से हम सभी को बड़ा दुःख है। भगवान् उनकी आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें। प्रधान स्वर्गीय श्री श्यामसिंह जी की अचानक मृत्यु के बाद सर्वसम्मति से श्री यशपाल आर्य सुपुत्र श्री रामेश्वर दास गांव-पो० मन्धार, ब्लाक रादौर जिला यमुनानगर मो० 9671375004 आर्यसमाज मन्धार के नए प्रधान बनाए गए।

**–कुलदीप सिंह आर्य, मंत्री आर्यसमाज मन्धार ( यमुनानगर )**

## यज्ञशाला.... पृष्ठ 13 का शेष....

कृतियां दिखाई गई तो उसने वे सभी कृतियां तोड़ डाली। राजा को बहुत क्रोध आया। राजा ने पूछा कि यह तूमने क्यों किया? वह व्यक्ति बोला मैंने 19 व्यक्तियों की जान बचाई है। तब राजा को समझ आई कि अपनी जान की परवाह न करने वाला व्यक्ति कितना उपकारी है समाज के लिए। यह सोचकर बिना कुछ कहे उसे जाने दिया। एक कवि की चार पंक्तियां इस प्रकार हैं–

**आत्मज्ञान से अपने तू, दृष्टि का बदल कर ले,**
**जब जोत जगे अन्दर, प्रभु का दर्शन कर ले।**
**पीके ओ३म् नाम रस मीठा, तू ओ३म् भजन कर ले,**
**ओ३म् नाम सिमर कर ले, मुक्ति का यत्न कर ले॥**

हम अपनी दृष्टि को सांसारिक पदार्थों से हटाकर थोड़ा-सा प्रभु की ओर लगा लें तो हम प्रभु की यज्ञशाला को पवित्र रखने में सहायक हो सकते हैं। इसके साथ हमारे देह के सातों ऋषि भी पवित्र रहकर पथभ्रष्ट होने से बच सकते हैं। यह हमारी मानव देह रूपी यज्ञशाला भी पवित्र रहेगी और हम प्रभु के प्यारे बन जायेंगे। **ओ३म् शान्तिः।**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अपने विचार रखते हुए सभाप्रधान मा० रामपाल आर्य जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा श्री मनोहरलाल जी को सम्मानित करते हुए माननीय श्री योगी आदित्यनाथ, श्री सत्यपाल जी, मा० रामपाल आर्य जी व अन्य।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली को सम्बोधित करते हुए वित्तमंत्री हरियाणा सरकार श्री कैप्टन अभिमन्यु जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली को सम्बोधित करते हुए आचार्य बालकृष्ण जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली को सम्बोधित करते हुए परिवहनमंत्री श्री नितिन गडकरी जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली को पाकिस्तान प्रतिनिधि मण्डल के साथ आचार्य सर्वमित्र आर्य व श्री रमेश आर्य।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में अफ्रीकी मूल की लड़कियों को सम्मानित करते हुए माननीय श्री राजनाथ जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में गुरुकुल की लड़कियों को सम्मानित करते हुए माननीय श्री राजनाथ जी।

ओ३म्

# आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

के तत्त्वावधान में

पूज्य आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर आयोजित

# प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

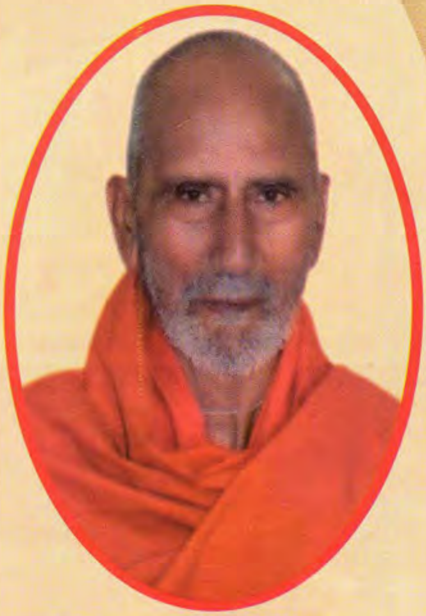

स्मृति शेष

**आचार्य बलदेव जी**

**दिनांक 27 जनवरी 2019**

**समय प्रातः 9 बजे से**

**स्थान - दयानन्द मठ, रोहतक**

## आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

सम्पर्क सूत्र- 8901387993, 9416874035, 9416503513, 9991996339

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ......................................

पता ......................................

......................................

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा